पाठ – मत बाँधो

पाठ सार

महादेवी वर्मा की कविता **'मत बाँधो'** में कवियत्री ने सपनों की स्वतंत्रता को बहुत महत्वपूर्ण बताया है। उन्होंने कहा है कि किसी के भी सपनों को रोकना या बाधित करना ठीक नहीं है। जैसे पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही सपनों की उड़ान रोकने से कल्पना और संभावनाएँ खत्म हो जाती हैं।
कवियत्री ने सपनों को बीज और सुगंध के उदाहरण से समझाया है कि जब उन्हें स्वतंत्र छोड़ दिया जाए, तो वे ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं और साकार होते हैं। सफल और प्रेरित लोग हमें दिखाते हैं कि सपनों की आज़ादी से हम रचनात्मक और स्वतंत्र बन सकते हैं और समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकते हैं।
मुख्य संदेश: **सपनों के पंख मत काटो, उनकी संभावनाओं को मत बाँधो, उन्हें स्वतंत्र रहने दो।**

पाठ व्याख्या

1. इन सपनों के पंख न काटो
   इन सपनों की गति मत बाँधो!
   सौरभ उड़ जाता है नभ में
   फिर वह लौट कहाँ आता है?
   बीज धूलि में गिर जाता जो
   वह नभ में कब उड़ पाता है?

शब्दार्थ –

गति मत बाँधो	–	बाधित न करो
सौरभ	–	सुगंध
नभ	–	आकाश
धूलि	–	धूल, धरती

व्याख्या – *इस पद्यांश में कवियत्री कहती हैं कि बच्चों और युवाओं के सपनों को रोकना या उनके पंख काटना ठीक नहीं है। जैसे यदि पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही सपनों की उड़ान रोकने से उनकी कल्पनाशीलता और संभावना खत्म हो जाती है।*
कवियत्री उदाहरण देती हैं – जब सुगंध (सौरभ) आकाश में उड़ जाती है, तो वापस नहीं आती। इसी तरह यदि बीज (सपने) धूल में गिर जाएँ, तो वे आकाश में नहीं उड़ पाते। इसका मतलब यह है कि सपनों को स्वतंत्र रहने दो, तभी वे ऊँचाइयों तक पहुँचकर सफल हो सकते हैं।

2. अग्नि सदा धरती पर जलती
   धूम गगन में मँडराता है!
   सपनों में दोनों ही गति हैं
   उड़ कर आँखों में आता है!
   इसका आरोहण मत रोको
   इसका अवरोहण मत बाँधो !

शब्दार्थ –

अग्नि – आग
धूम – धूआँ
मँडराता – घूमता
गति – अवस्था
आरोहण – चढ़ना, ऊपर को जाना
अवरोहण – उतरने की क्रिया, पतन, नीचे की ओर आना

व्याख्या – *इस पद्यांश में कवियत्री कहती हैं कि सपनों में आग और धुएँ जैसी विशेषता होती है। जैसे आग धरती पर जलती है और धुआँ आकाश में फैलता है, वैसे ही सपने मन में जन्म लेकर कल्पनाओं की उड़ान भरते हैं और आँखों में साकार होते हैं।*

कवियत्री सभी से प्रार्थना करती हैं कि सपनों के बनने (आरोहण) और साकार होने (अवरोहण) में बाधा मत डालो। केवल स्वतंत्रता ही सपनों को पूरा करने का सहारा है।

3. मुक्त गगन में विचरण कर यह
तारों में फिर मिल जायेगा,
मेघों से रंग औ' किरणों से
दीप्ति लिए भू पर आयेगा।
स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प
भूमि को सिखलायेगा !

शब्दार्थ –

मुक्त – आजाद
विचरण – घूमना
औ' – और
दीप्ति – तेज, आभा
भू – धरती
शिल्प – कला

व्याख्या – उपरोक्त पंक्तियों में कवियत्री सपनों के बारे में बताती हुई कहती है कि सपने, जब स्वतंत्र होते हैं, तो वे तारों तक पहुँच जाते हैं अर्थात जब सपनों को स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है तो वे अधिक ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं या सफलता को प्राप्त करते हैं। वे बादलों से रंग और किरणों से तेज लेकर ही धरती पर उतारते हैं अर्थात ऊँचाइयों पर पहुँच कर वे सफल लोगों से सुंदरता व प्रेरणा लेकर ही लौटते हैं। स्वतन्त्र सपने धरती पर उतरकर धरती को स्वर्ग मनाने की कला सिखाएँगे। अर्थात सफल और समृद्ध लोगों से प्रेरणा ले कर अपने सपनों को साकार करके व्यक्ति रचनात्मक और स्वतंत्र विचारों से समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकता है।

4. नभ तक जाने से मत रोको
धरती से इसको मत बाँधो !

इन सपनों के पंख न काटो
इन सपनों की गति मत बाँधो !

शब्दार्थ –

व्याख्या – *उपरोक्त पंक्तियों में कवियत्री समाज के सभी लोगों से अनुरोध करती है कि सपनों को ऊँचाइयों तक जाने से मत रोको। उन्हें धरती से बाँधकर मत रखो। सपनों के पंख मत काटो और सपनों की संभावनाओं को मत बांधो। क्योंकि किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही अगर हम किसी के सपनों को बाधित करें तो उसकी कल्पनाशीलता और संभावनाएँ समाप्त हो जाएँगी। कहने का आशय यह है कि सपनों को साकार करने के लिए सपनों को स्वतंत्र छोड़ना आवश्यक है।*

पाठ से

मेरी समझ से

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उपयुक्त उत्तर के सम्मुख तारा (★) बनाइए। कुछ प्रश्नों के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते हैं-

प्रश्न 1. आप इनमें से कविता का मुख्य भाव किसे समझते हैं?

- सपने मात्र कल्पनाएँ हैं
- सपनों को भूल जाना चाहिए
- सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए
- सपने देखना अच्छी बात है

उत्तर:

- सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए (★)

प्रश्न 2. 'मत बाँधो' कविता किसकी स्वतंत्रता की बात करती है?

- प्रेम की
- शिक्षा की
- सपनों की
- अधिकारों की

उत्तर:

- सपनों की (★)

प्रश्न 3. "इन सपनों के पंख न काटो" पंक्ति में सपनों के 'पंख' होने की कल्पना क्यों की गई है?

- सपने जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देते हैं
- सपने सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाते हैं
- सपने पंखों की तरह उड़ान भर भ्रमण करवाते हैं
- सपने पंखों की तरह कोमल और अनेक प्रकार के होते हैं

उत्तर:

- सपने जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देते हैं (★)

प्रश्न 4. "स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प" पंक्ति में 'स्वर्ग' से आप क्या समझते हैं?

- जहाँ किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट न हो
- जहाँ अतुलनीय धन संपत्ति हो
- जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो
- जहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हों

उत्तर:

- जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो (★)
- जहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हों (★)

प्रश्न 5. यदि बीज धूल में गिर जाए तो क्या हो सकता है?

- वह बहुत तेजी से उड़ सकता है
- वह और गहरा हो सकता है
- उसकी उड़ान रुक सकती है
- वह बढ़कर पौधा बन सकता है

उत्तर:

- वह बढ़कर पौधा बन सकता है (★)

(ख) हो सकता है कि आपके समूह के साथियों ने अलग-अलग उत्तर चुने हों। अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर:

हमने यही उत्तर इसलिए चुने क्योंकि कविता और जीवन के अनुसार यही बातें उचित हैं। ये सभी बातें हमें जीवन में ऊँचा उठना और आगे बढ़ना सिखाती है।

पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और इन पर विचार कीजिए। आपको इनका क्या अर्थ समझ में आया? अपने विचार अपने समूह में साझा कीजिए और लिखिए।

(क) "सौरभ उड़ जाता है नभ में
फिर वह लौट कहाँ आता है?
बीज धूलि में गिर जाता जो
वह नभ में कब उड़ पाता है?"

उत्तर:

कवयित्री कहती हैं कि सुगंध जब एक बार आसमान में उड़ जाती है तो वह आसमान में ही खो जाती है और फिर

लौटकर नहीं आती। इसी प्रकार बीज भी जब धूल में गिरता है और उस समय उसे जल और सूर्य से पोषित ना किया जाए तो उसमें भी अंकुर नहीं फूटता। इसी प्रकार जब हम अपने सपनों को महत्व देकर उसे पूरा करने का प्रत्येक संभव प्रयास नहीं करते तो वह भी अपना अस्तित्व खोकर हमारे जीवन से दूर चला जाता है और नष्ट हो जाता है।

(ख) "मुक्त गगन में विचरण कर यह
तारों में फिर मिल जायेगा,
मेघों से रंग औ' किरणों से
दीप्ति लिए भू पर आयेगा।"

उत्तर:

जब हम अपने सपनों को पूरा करने का प्रयास करते हैं तो यह प्रत्येक तारे रूपी सहायक वस्तुओं के साथ मिलकर जीवन रूपी आसमान में स्वतंत्र उड़कर कामयाबी रूपी मेघों के संग मिलकर सुख रूपी किरणों के साथ बरस कर, लाभ रूपी प्रकाश के साथ, भूमि रूपी हमारे जीवन में उतरता है और दूसरों के लिए भी प्रेरणा बन जाता है इसी कारण सपनों को स्वतंत्र उड़ने देना चाहिए।

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों को उनके सही भाव अथवा संदर्भ से मिलाइए।

क्रम	स्तंभ 1		स्तंभ 2
1.	इन सपनों के पंख न काटो इन सपनों की गति मत बाँधो!	1.	सपनों के उठने (आरोहण) और उनके व्यवहार में वापस आने (अवरोहण) में बाधा न डालें, क्योंकि स्वतंत्रता ही सपनों को साकार करने की कुंजी है।
2.	सपनों में दोनों ही गति हैं उड़कर आँखों में आता है!	2.	सपनों को ऊँचाइयों तक जाने से मत रोको। उन्हें धरती से बाँधकर मत रखो।
3.	इसका आरोहण मत रोको इसका अवरोहण मत बाँधो!	3.	किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही अगर हम किसी के सपनों को बाधित करें तो उसकी कल्पनाशीलता और संभावनाएँ समाप्त हो जाएँगी।
4.	नभ तक जाने से मत रोको धरती से इसको मत बाँधो!	4.	रचनात्मक और स्वतंत्र विचार समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकता है।
5.	स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!	5.	सपनों में ऊपर उठने (आरोहण) और नीचे आने (अवरोहण) दोनों की विशेषता होती है। सपना विचार की तरह जन्म लेता है और फिर व्यवहार में पूरा होता है, तभी वह कल्पना से निकलकर सच्चाई बनता है।

उत्तर:

1. 3
2. 5
3. 1
4. 2
5. 4

सोच-विचार के लिए

कविता को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए-

(क) कविता में 'मत बाँधो', 'पंख न काटो' आदि संबोधन किसके लिए किए गए होंगे?

उत्तर:

कविता में 'मत बाँधो' और 'पंख न काटो' – संबोधन 'सपनों' के लिए किए गए हैं। कवयित्री कहती हैं कि हमें अपने सपनों को स्वतंत्र उड़ने देना चाहिए।

(ख) कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात क्यों कही गई होगी?

उत्तर:

कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात इसलिए कहीं गई होगी क्योंकि यदि सपनों को स्वतंत्र उड़ने नहीं दिया जाएगा तो वे हमारी आँखों में रह जाएँगें और समय के साथ खो जाएँगे, तथा एक बार यदि वो खो गए तो दुबारा आँखों में लौटकर नहीं आएँगे। इसी कारण हमें अपने सपनों को पूरी गति से इच्छाओं और प्रयासों को स्वतंत्र आसमान में उड़ने देना चाहिए।

(ग) कविता में सौरभ, बीज, धुआँ, अग्नि जैसे उदाहरणों के माध्यम से सपनों को इनसे भिन्न बताते हुए उसे विशेष बताया गया है। आपकी दृष्टि में इन सबसे अलग सपनों की और कौन – सी विशेषताएँ हो सकती हैं?

उत्तर:

सौरभ – आसमाँ में फैलकर खो जाता है।
बीज – धरती में पोषित होकर अंकुरित होता है।
धुआँ – सदैव आसमान में मँडराता रहता है।
अग्नि – धरती पर जलकर प्रकाश देती है।

इन सबसे भिन्न सपनों की बड़ी ही सुंदर विशेषता है और वो है – "सपने – पूरे होकर जीवन को स्वर्ग के समान सुंदर बनाते हैं।" साथ ही दूसरों के सपनों को भी पूरा होने हेतु प्रेरित करते हैं।

(घ) कविता में 'आरोहण' और 'अवरोहण' दोनों के महत्व की बात की गई है। उदाहरण देकर बताइए कि आपने 'आरोहण' और 'अवरोहण' को कब-कब सार्थक होते देखा?

उत्तर:

आरोहण का मतलब है ऊपर उठना और अवरोहण का मतलब है नीचे गिरना। जीवन में जब हम अपने सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत करते हैं, तो वे ऊपर उठते हैं (आरोहण) और सफल होते हैं। अगर हम प्रयास नहीं करते, तो सपने नीचे गिर जाते हैं (अवरोहण) और अधूरे रह जाते हैं।

(ङ) "सपनों में दोनों ही गति है / उड़कर आँखों में आता है ! "क्या आप सहमत हैं कि सपने 'आँखों में लौटकर' वास्तविकता बन जाते हैं? अपने अनुभव या आस-पास के अनुभवों से कोई उदाहरण दीजिए।

उत्तर:

यह सच है कि सपने कभी उड़कर खो भी जाते हैं और कभी मेहनत से सच भी बन जाते हैं। मेरे पड़ोस का एक 10वीं का छात्र बॉक्सिंग में गोल्ड जीतने का सपना देखता था। घरवाले उसे पढ़ाई में ध्यान देने के लिए दबाव डालते थे। बावजूद इसके उसने हार नहीं मानी। 10वीं में उसने 65% अंक लिए, लेकिन राजकीय स्तर पर बॉक्सिंग में गोल्ड जीतकर सम्मान भी पाया और ओलंपियाड की तैयारी में लग गया। इस प्रकार मेहनत से उसका सपना सच हुआ।

शीर्षक

कविता का शीर्षक है 'मत बाँधो'। यदि आपको इस कविता को कोई अन्य नाम देना हो तो क्या नाम देंगे? आपने यह नाम क्यों सोचा? यह भी लिखिए।

उत्तर:

यदि इस कविता का शीर्षक रखा जाए तो हम इसे **'सपने'** रखना चाहेंगे। क्योंकि पूरी कविता का मुख्य विषय सपने हैं। जीवन में सपने महत्वपूर्ण होते हैं और हमें उन्हें पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। सपनों को स्वतंत्र उड़ान देने से ही हम ऊँचाइयों को छू सकते हैं।

अनुमान और कल्पना से

(क) मान लीजिए आप एक नया संसार बनाना चाहते हैं। उस संसार में आप क्या – क्या रखना चाहेंगे और क्या-क्या नहीं? अपने उत्तर का कारण भी बताइए।

उत्तर:

यदि मैं एक नया संसार बनाऊँ तो वह मेरे सपनों का संसार होगा। इसमें मैं चाहूँगा कि सभी के पास सुख-शांति हो, किसी को धन की कमी न हो, सब अच्छा खाएँ और पहनें, मिल-जुलकर रहें, सपने पूरे हों, सुंदर प्रकृति हो, सभी शिक्षित और विकसित हों तथा एक-दूसरे के सहयोगी हों।
मैं अपने संसार में लालच, अन्याय, अत्याचार, झगड़ा, युद्ध, हिंसा, प्रदूषण, गरीबी और अज्ञानता नहीं रखना चाहूँगा। मेरा संसार स्वच्छ, शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा।

(ख) कविता में शिल्प और कला के महत्व की बात की गई है। कलाएँ हमारे आस-पास की दुनिया को सुंदर बनाती हैं। आप अपने जीवन को सुंदर बनाने के लिए कौन-सी कला सीखना चाहेंगे? उससे आपका जीवन कैसे सुंदर बनेगा? अनुमान करके बताइए|

उत्तर:

कला और शिल्प हमारे जीवन को सुंदर बनाते हैं। ये हमारे वातावरण को सजाते हैं, चाहे वह मूर्तिकला हो, चित्रकला

या नक्काशी। हमारे इतिहास की अनेक इमारतें, गुफाएँ और मंदिर कला और शिल्प के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। अगर मुझे किसी कला को सीखने का अवसर मिले, तो मैं चित्रकला सीखना चाहूँगा, क्योंकि मुझे रंगों में काम करना पसंद है। चित्रकला सीखकर मैं सुंदर चित्र बनाकर अपने घर को सजाऊँगा।

(ग) "सौरभ उड़ जाता है नभ में / फिर वह लौट कहाँ आता है?" यदि आपके पास अपने बीते हुए समय में लौटने का अवसर मिले तो आप बीते हुए समय में क्या-क्या परिवर्तन करना चाहेंगे?

उत्तर:

यदि मुझे अपने बीते समय में लौटने का अवसर मिले, तो मैं अपनी गलतियों को सुधारूँगा। पढ़ाई पर अधिक ध्यान दूँगा और माता-पिता, अध्यापक व बड़े लोगों की सलाह मानकर सही दिशा में कदम बढ़ाऊँगा। अपने सपनों को फिर से जीवित करके जीवन को सरल और सुंदर बनाने का प्रयास करूँगा।

(घ) "बीज धूलि में गिर जाता जो / वह नभ में कब उड़ पाता है?" यदि सपने बीज की तरह हों तो उन्हें उगने के लिए किन चीजों की आवश्यकता होगी? (संकेत- धूप अर्थात मेहनत, पानी अर्थात लगन आदि ।)

उत्तर:

यदि सपने बीज की तरह होते, तो हम उन्हें ध्यान और प्यार से सँभालते। उन्हें लगन और मेहनत से पानी और धूप देते, ताकि वे अंकुरित होकर फलदायक वृक्ष बनें। ये सिर्फ हमारे लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनें।

(ङ) "स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा!" यदि अच्छे सपनों या विचारों से स्वर्ग बनाया जा सकता है तो बुरे सपनों अथवा विचारों से क्या होता होगा? बुरे सपनों या विचारों से कैसे बचा जा सकता है?

उत्तर:

अच्छे सपने जीवन को स्वर्ग जैसी सुंदरता देते हैं। यदि हमारे सपने नेक और फलदायक हों, तो सभी के लिए सुख और खुशी लाते हैं। परंतु यदि सपने स्वार्थी और बुरे हों, तो वे नर्क जैसा परिणाम देते हैं। इसलिए हमें अपने साथ दूसरों के सुख की भी चिंता करनी चाहिए और स्वार्थ, लालच तथा बुरे विचार छोड़कर सहयोग और प्रेम की भावना अपनानी चाहिए।

(च) "इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!" कल्पना कीजिए कि हर किसी को सपने देखने और उन्हें पूरा करने की पूरी स्वतंत्रता मिल जाए, तब दुनिया कैसी होगी? आपके अनुसार उस दुनिया में कौन-सी बातें महत्वपूर्ण होंगी?

उत्तर:

यदि सभी को अपने सपने पूरे करने का अवसर मिले, तो दुनिया बहुत सुंदर होगी। परंतु यह जरूरी है कि हमारे सपने दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन न करें। सपने पूरे करने में प्रयास और मर्यादा भी जरूरी है। जब सब अपने सपनों के साथ दूसरों के अधिकारों का सम्मान करेंगे, तभी समाज सही मायनों में खूबसूरत और सामंजस्यपूर्ण बनेगा।

(छ) "इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!" आपके विचार से यह सुझाव है? आदेश है? प्रार्थना है? या कुछ और है? यह बात किससे कही जा रही है?

उत्तर:

'इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो' कोई आदेश या प्रार्थना नहीं, बल्कि प्रेरणा है। यह हमें सिखाती है कि अपने सपनों को स्वतंत्र छोड़ें और उन्हें साहस व परिश्रम से संवारें। जब सपने पूरे होते हैं, तो वे फलदायी बनकर समाज में स्वर्ग जैसी सुंदरता और दूसरों के लिए लाभ लाते हैं, जैसे डॉक्टर, शिक्षक या कलाकार अपने कार्य से कई लोगों की भलाई करते हैं।

कविता की रचना

- "सौरभ उड़ जाता है नभ में..."
- "बीज धूलि में गिर जाता जो..."
- "अग्नि सदा धरती पर जलती..."

उपर्युक्त पंक्तियों पर ध्यान दीजिए। इन पंक्तियों को पढ़ते समय हमारी आँखों के सामने कुछ चित्र उभर आते हैं। कई बार कवि अपनी बात अथवा मुख्य भाव को समझाने या बताने के लिए उदाहरणों के माध्यम से शब्द-चित्रों की लड़ी-सी लगा देता है जिससे कविता में विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। इस कविता में भी ऐसी अनेक विशेषताएँ छिपी हैं।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर इन विशेषताओं की सूची बनाइए। अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझा कीजिए।

उत्तर:

कविता में अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिनका चित्र आँखों के सामने उभरता है।

जैसे-

- मुक्त गगन में विचरण
- तारों में फिर मिल
- मेघों से रंग औ' किरणों से
- दीप्ति लिए भू पर आयेगा

(ख) नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ समाहित हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए।

क्रम	कविता की विशेषताएँ		कविता की पंक्तियाँ
1.	एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है।	1.	वह नभ में कब उड़ पाता है?
2.	एक ही शब्द का प्रयोग बार-बार किया गया है।	2.	इसका आरोहण मत रोको इसका अवरोहण मत बाँधो!
3.	समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया गया है।	3.	स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!
4.	प्रश्न पूछा गया है।	4.	इन सपनों के पंख न काटो
5.	संबोधन का प्रयोग किया गया है।	5.	नभ तक जाने से मत रोको धरती से इसको मत बाँधो!
6.	सपने को मनुष्य की तरह चित्रित किया गया है।	6.	दीप्ति लिए भू पर आयेगा। स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!

उत्तर:

1. – 2
2. – 5
3. – 6
4. – 1
5. – 4
6. – 3

शब्दों की बात

"इसका आरोहण मत रोको

इसका अवरोहण मत बाँधो!"

उपर्युक्त पंक्तियों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। 'आरोहण' और 'अवरोहण' दोनों एक-दूसरे के विपरीतार्थक शब्द हैं। आरोहण का अर्थ है- नीचे से ऊपर की ओर जाना या चढ़ना और अवरोहण का अर्थ है- ऊपर से नीचे की ओर आना या उतरना।

(क) नीचे दिए रिक्त स्थान में 'आरोहण' और 'अवरोहण' का उपयुक्त प्रयोग करके वाक्यों को पूरा कीजिए।

- पर्वतारोहियों ने बीस दिन तक पर्वत पर .... कर विजय प्राप्त की।
- नदियाँ विशाल पर्वतों से .... करते हुए सागर में मिल जाती हैं।
- अंकगणित में बड़ी संख्या से छोटी संख्या की ओर लिखने की प्रक्रिया .... क्रम कहलाती है।

इसी प्रकार से 'आरोहण' और 'अवरोहण' शब्दों के प्रयोग को देखते हुए आप भी कुछ सार्थक वाक्य बनाइए।

उत्तर:

1. मैंने इस मीनार की 150 सीढ़ियों पर आरोहण किया।
2. यदि संभलकर नहीं चलोगे तो जो प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उससे अवरोहण में अधिक समय नहीं लगेगा।
3. साँप – सीढ़ी में आरोहण और अवरोहण का खेल चलता ही रहता है।
4. सुमित की मूर्खता ने उसकी गति को अवरोहण की दिशा में धकेल दिया।
5. एवरेस्ट पर आरोहण बहुत ही कठिन है।

(ख) नीचे दी गई कविता की पंक्तियों के रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए-

'वह नभ में कब उड़ पाता है "?

'धूम गगन में मँडराता है।

'नभ' और 'गगन' समान अर्थ वाले शब्द हैं। रेखांकित शब्दों के समानार्थी शब्दों का प्रयोग करते हुए कुछ नई पंक्तियों की रचना कीजिए और देखिए कि पंक्तियों में लय बनाए रखने के लिए और किन परिवर्तनों की आवश्यकता पड़ती है?

उत्तर:

वह नभ में कब उड़ पाता है।

धूम गगन में मँडराता है।

नवीन पंक्तियाँ-

1. नील गगन का है विस्तार,
किसने जाना नभ का पार?
2. मेरे सपने नभ तक जाते,
नील गगन पर शोभा पाते।
3. तारे झिलमिल दूर गगन में,
कितना उजियाला फैलाए।
पल भर में फिर सब छिप जाएँ,
जब सूरज नभ पर छा जाए॥

4. अंधियारे नभ पर शशि पधारे,
   प्रातः गगन सूरज को पुकारे।

(ग) कविता में 'मत' शब्द के साथ 'बाँधो', 'काटो' क्रिया लगाई गई है। आप 'मत' के साथ कौन-कौन-सी क्रियाएँ लगाना चाहेंगे? लिखिए। (संकेत – ' मत डरो')

उत्तर:

'मत' शब्द के साथ अन्य क्रियाएँ–

1. 'मत खाओ'
2. 'मत जाओ'
3. 'मत सुनो'
4. 'मत बोलो'
5. 'मत खेलो'
6. 'मत कहो'
7. 'मत मानो'
8. 'मत देखो'
9. 'मत समझो'
10. 'मत करो'

(घ) आपकी भाषा में 'बाँधने' के लिए और कौन-कौन सी क्रियाएँ हैं? अपने समूह में चर्चा करके लिखिए और उनसे वाक्य बनाइए। (संकेत – जोड़ना)

उत्तर:

भाषा सीखने का सॉफ्टवेयर

1. जकड़ना-ये खुंखार जीव है, इसे जंजीरों से जकड़ लो।
2. कसना – माँ ने अपने नन्हें पुत्र को बाहों में कस लिया।
3. मिलाना – चीनी को अच्छी तरह से पानी में मिलाओ।
4. चिपकाना – लकड़ी को फेविकोल से दरवाजे पर अच्छी तरह चिपकाओ।
5. लगाना – दीवार पर तस्वीर को कील से लगाओ।

(ङ) 'मत' शब्द को उलट कर लिखने से शब्द बनता है 'तम' जिसका अर्थ है 'अँधेरा'। कविता में से कुछ ऐसे और शब्द छाँटिए जिन्हें उलट कर लिखने से अर्थ देने वाले शब्द बनते हैं।

उत्तर:

'मत' – का विपरीत है- 'तम' जिसका अर्थ अँधेरा। काव्य के अन्य शब्द-

1. 'जाता' का विपरीत 'ताजा' हरा-भरा
2. 'धूम' – 'मधू' – शहद
3. 'यह' 'हय' – घोड़ा
4. 'कहाँ' – 'हाँक' – हुँकार

काल परिवर्तन

"सौरभ उड़ जाता है नभ में"

उपर्युक्त पंक्ति को ध्यान से देखिए। इस पंक्ति की क्रिया ' जाता है' से पता चलता है कि यह वर्तमान काल में लिखी गई है। यदि हम इसी पंक्ति को भूतकाल और भविष्य काल में लिखें तो यह निम्नलिखित प्रकार से लिखी जाएगी – भूतकाल – सौरभ उड़ गया है नभ में भविष्य काल – सौरभ उड़ जाएगा नभ में कविता में वर्तमान काल में लिखी गई ऐसी अनेक पंक्तियाँ आई हैं। उन पंक्तियों को कविता में से ढूँढ़कर भूतकाल और भविष्य काल में लिखिए।

उत्तर:

वर्तमान काल	**भूतकाल**	**भविष्य काल**
फिर वह लौट कहाँ आता है?	फिर वह लौट कहाँ आता था?	फिर वह लौट कहाँ आएगा?
वह नभ में कब उड़ पाता है?	वह नभ में कब उड़ पाता था?	वह नभ में कब उड़ पाएगा?
बीज धूलि में गिर जाता जो	बीज धूलि में गिर जाता था	बीज धूलि में गिर जाएगा
अग्नि सदा धरती पर जलती	अग्नि सदा धरती पर जलती थी	अग्नि सदा धरती पर जलेगी
धूम गगन में मँडराता है	धूम गगन में मँडराता था	धूम गगन में मँडराएगा
सपनों में दोनों ही गति है	सपनों में दोनों ही गति थी	सपनों में दोनों ही गति होगी
उड़कर आँखों में ही आता है	उड़कर आँखों में ही आता था	उड़कर आँखों में ही आएगा

शब्दकोश से

"स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प"

शब्दकोश के अनुसार 'शिल्प' शब्द के निम्नलिखित अर्थ हैं-

1. हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम -दस्तकारी, कारीगरी या हुनर, जैसे—बरतन बनाना, कपड़े सिलना, गहने गढ़ना आदि।
2. कला संबंधी व्यवसाय।
3. दक्षता, कौशल।
4. निर्माण, सर्जन, सृष्टि, रचना।
5. आकार, आवृत्ति।
6. अनुष्ठान, क्रिया, धार्मिक कृत्य।

अब शब्दकोश से 'शिल्प' शब्द से जुड़े निम्नलिखित शब्दों के अर्थ खोजकर लिखिए-

प्रश्न 1. शिल्पकार, शिल्पी, शिल्पजीवी, शिल्पकारक, शिल्पिक या शिल्पकारी

उत्तर:

शिल्पकार, शिल्पी, शिल्पजीवी, शिल्पकारक, शिल्पिक या शिल्पकारी

प्रश्न 2. शिल्पकला

उत्तर:

शिल्पकला – हस्तकला, शिल्पकारी, कारीगरी, दस्तकारी

प्रश्न 3. शिल्पकौशल

उत्तर:

शिल्पकौशल – कला और शिल्प, शिल्प, कारीगर कला, शिल्प शास्त्र

प्रश्न 4. शिल्पगृह या शिल्पगेह

उत्तर:

शिल्पगृह – शिल्पशाला, कलाशाला, कला- केंद्र

प्रश्न 5. शिल्पविद्या

उत्तर:

शिल्पविद्या – कलात्मक विद्या, कलात्मक कौशल, कला और शिल्प

प्रश्न 6. शिल्पशाला या शिल्पालय

उत्तर:

शिल्पशाला – शिल्पगृह, कार्यशाला, शिल्प का घर, शिल्प का स्थान, कारखाना

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) कविता में गति को न बाँधने की बात कही गई है। आप 'बाँधने' का प्रयोग किन-किन स्थितियों या वस्तुओं के लिए करते हैं? बताइए (संकेत -गाँठ बाँधना)

उत्तर:

हम 'बाँधने' शब्द का प्रयोग निम्नलिखित वस्तुओं और परिस्थितियों के लिए करते हैं-

1. रस्सी बाँधना
2. गिरह बाँधना
3. जंजीर बाँधना
4. प्रेम में बाँधना
5. रिश्तों में बाँधना
6. नियमों में बाँधना
7. कर्तव्यों से बाँधना
8. गठरी बाँधना

(ख) 'स्वर्ग' शब्द से आशय है 'सुखद स्थान'। अर्थात वह स्थान जहाँ सुख, शांति, समृद्धि और आनंद की अनुभूति हो। अपने घर, आस-पड़ोस और विद्यालय को सुखद स्थान बनाने के लिए आप क्या – क्या प्रयास करेंगे? सूची बनाइए और घर के सदस्यों के साथ साझा कीजिए।

उत्तर:

अपने घर, पास-पड़ोस और विद्यालयों को सुखी बनाने के लिए हम निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं-

1. पेड़-पौधे लगाकर हरा-भरा कर सकते हैं।
2. विद्यालय में फूलों की सुंदर फुलवारी बना सकते हैं।
3. घर, पास-पड़ोस और विद्यालय को स्वच्छ रख सकते हैं।
4. विद्यालय की दीवारों पर सुंदर चित्रकारी कर सकते हैं।
5. सभी के साथ मिल-जुलकर सहयोग करते हुए रह सकते हैं।
6. सभी से प्रेम से मीठा बोलकर रह सकते हैं।
7. विद्यालय में गुरुओं का आदर करके और ध्यानपूर्वक पढ़कर अच्छे अंक ला सकते हैं।
8. माता-पिता और बुजुर्गों का आदर सम्मान कर सकते हैं।
9. पास-पड़ोस में प्रेमपूर्वक रहकर खुशियाँ बाँट सकते हैं।
10. ईश्वर पर विश्वास रखते हुए सहयोग की भावना रख सकते हैं।

(ग) कविता में सपनों की बात की गई है। आपका कौन – सा सपना ऐसा है जो यदि सच हो जाए तो वह दूसरों की सहायता कर सकता है? उसके विषय में बताइए |

उत्तर:

मेरा सपना डॉक्टर बनने का है और मैं इसमें बहुत मेहनत करूँगा, जिससे कि बड़ा होकर डॉक्टर बनकर दूसरों का इलाज कर सकूँ। मैं भविष्य में डॉक्टर बनकर लालच नहीं करूँगा, यदि कोई गरीब या जरूरतमंद होगा तो उसका निःशुल्क इलाज भी करूँगा।

चर्चा-परिचर्चा

"सपनों में दोनों ही गति है / उड़कर आँखों में आता है।" किसी एक के द्वारा देखा गया सपना बहुत से लोगों का सपना भी बन जाता है, जैसे- हमारे स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा भारत को स्वतंत्र कराने का सपना सभी भारतीयों का सपना बन गया। साथियों से चर्चा कीजिए कि आपके कौन-से ऐसे सपने हैं जिन्हें पूरा करने के लिए आप अन्य लोगों को भी जोड़ना चाहेंगे।

उत्तर:

जीवन में अनेक सपने ऐसे होते हैं जो व्यक्तिगत न होकर सामूहिक हो सकते हैं। मेरा भी ऐसा एक सपना है। अपने पास-पड़ोस और समाज को स्वच्छ व हरा-भरा बनाना मेरा सपना है कि मेरे आस – पास का क्षेत्र हमेशा हरा-भरा रहे। मेरे समाज और देश में भी पर्यावरण सदैव स्वच्छ व हरित रहे।

मैं अपने इस अभियान में दूसरों को भी जोड़कर सपने को पूर्ण करना चाहता हूँ। सबके साथ मिलकर पेड़ लगाना, आस-पास स्वच्छता रखने में लोगों को जागरूक करना आदि। इन सबके लिए मैं अन्य लोगों की सहायता से अभियान चलाना चाहता हूँ।

सृजन

(क) विराम चिह्न का फेरबदल –

रोको मत, जाने दो

रोको, मत जाने दो

लेखन में विराम चिह्नों का विशेष महत्व होता है। विराम चिह्नों के प्रयोग से वाक्य या पंक्ति का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और परिवर्तित भी हो जाता है, जैसे – 'रोको मत, जाने दो' में रोको मत के बाद अल्पविराम चिह्न (,) का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि बिना रोके जाने दिया जाए। वहीं 'रोको, मत जाने दो' में रोको के बाद अल्पविराम (,) का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि जाने से रोका जाए। नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। आप किन चित्रों के लिए 'रोको मत, जाने दो' या 'रोको, मत जाने दो' का प्रयोग करेंगे? दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए और इन चित्रों को शीर्षक भी दीजिए।

उत्तर:

शीर्षक–सड़क सुरक्षा

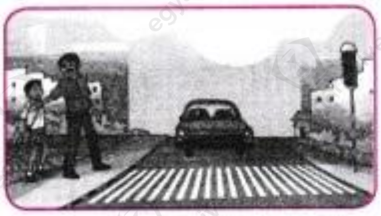

रोको, मत जाने दो

शीर्षक–अभ्यारण

रोको, मत जाने दो

शीर्षक–देशभक्ति

रोको मत, जाने दो

शीर्षक–मतदान

रोको मत, जाने दो

शीर्षक–यातायात के नियम

रोको, मत जाने दो

शीर्षक–परोपकार

रोको मत, जाने दो

(ख) कविता आगे बढ़ाएँ

नीचे दी गई पंक्तियों को आगे बढ़ाते हुए अपनी एक कविता तैयार कीजिए।

इन सपनों के पंख न काटो,
इन सपनों की गति मत बाँधों।

उत्तर:

स्वतंत्र नभ में उड़ने दो इन्हें,
पिछड़ेपन की सीमा लाँघो ।।

(ग) खोया-पाया

मान लीजिए आपका सपना कहीं खो गया है। उसके खो जाने की रिपोर्ट तैयार करें। आपको स्कूल प्रशासन को यह रिपोर्ट भेजनी है। इसके लिए स्कूल प्रशासन के नाम एक पत्र लिखिए।

उत्तर:

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली,
दिनाँक – xxx जुलाई
सेवा में,
श्रीमान प्रबंधक जी,
अ.ब.स. विद्यालय
सुमित्रा विहार,
दिल्ली।
विषय – 'सपना खोने' की रिपोर्ट हेतु।
मान्यवर,

निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय का आठवीं 'अ' का छात्र हूँ। अभी दो दिन पहले ही मैंने अपने मित्र के साथ एक सुंदर सपना देखा था कि हम दोनों ने मिलकर विद्यालय में एक सुंदर फुलवारी सजाई है। हम बस कुछ दिनों बाद ही अपने अन्य साथियों के साथ इस कार्य को आरंभ करने वाले थे, परंतु मेरा वो सपना कहीं खो गया है, मैंने कक्षा में भी पूछा परंतु कुछ पता नहीं चला।

अतः आपसे मेरा निवेदन है कि आप मेरा सपना खोजने में मेरी सहायता करें। मैं और मेरे मित्र आपके आभारी रहेंगे। आशा है आप जल्द ही मेरा सपना मुझे ढूँढ़कर देंगे। आपकी अति कृपा होगी।

धन्यवाद!
आपका आज्ञाकारी शिष्य,
क. ख.ग.

वाद-विवाद

(क) कक्षा में पाँच-पाँच विद्यार्थियों के समूह बनाकर एक वाद-विवाद गतिविधि का आयोजन कीजिए। इसके लिए विषय है – "व्यक्ति को बाँध सकते हैं उसकी कल्पना और विचारों को नहीं।"

एक समूह विषय के विपक्ष में और दूसरा समूह विषय के पक्ष में अपना तर्क देगा जैसे-
समूह 1 – व्यक्ति की कल्पना और विचारों पर नियंत्रण आवश्यक है।
समूह 2 – स्वतंत्र विचार और कल्पना प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं करें।

विषय: "व्यक्ति को बाँध सकते हैं उसकी कल्पना और विचारों को नहीं।"

समूह गठन:

- प्रत्येक समूह में 5-5 विद्यार्थी होंगे।
- एक समूह विषय के पक्ष में और दूसरा समूह विषय के विपक्ष में तर्क प्रस्तुत करेगा।

समूह 1 (विपक्ष – व्यक्ति की कल्पना और विचारों पर नियंत्रण आवश्यक है):

तर्क के उदाहरण:

1. यदि व्यक्ति की कल्पना और विचारों पर कोई नियंत्रण न हो, तो वह भ्रम और गलत दिशा में जा सकता है।
2. समाज और परिवार के नियमों के अनुसार सही और अनुशासित विचार रखना आवश्यक है।
3. बिना मार्गदर्शन के स्वतंत्र विचार कभी-कभी हानिकारक भी हो सकते हैं।
4. बच्चों और युवाओं के विचारों को सीमित करना उन्हें अनुशासित और जिम्मेदार बनाता है।
5. कल्पनाएँ सीमित न हों तो व्यक्ति वास्तविक दुनिया में समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।

समूह 2 (पक्ष – स्वतंत्र विचार और कल्पना प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं):

तर्क के उदाहरण:

1. स्वतंत्र विचार और कल्पना ही नवाचार और प्रगति का मार्ग खोलते हैं।
2. किसी के विचारों को बाँधना उसे रचनात्मक बनने से रोकता है।
3. विज्ञान, कला और साहित्य में सफलता हमेशा स्वतंत्र सोच के कारण ही मिलती है।
4. व्यक्ति की मानसिक स्वतंत्रता उसके व्यक्तित्व और आत्मविश्वास को विकसित करती है।
5. कल्पना और विचार समाज और व्यक्ति दोनों के लिए सकारात्मक बदलाव लाते हैं।

क्रियावली:

1. दोनों समूहों को 3-5 मिनट तैयारी का समय दिया जाएगा।
2. प्रत्येक समूह अपने तर्क 2-3 मिनट में प्रस्तुत करेगा।
3. चर्चा के बाद शिक्षक या समुचित निर्णायक निर्णायक निर्णय देगा और मुख्य बिंदुओं पर टिप्पणी करेगा।
4. अंत में सभी विद्यार्थियों से प्रश्न पूछकर उनकी राय ली जाएगी।

(ख) विद्यार्थी वाद-विवाद के अनुभवों पर एक अनुच्छेद भी लिख सकते हैं।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं करें।

हमने कक्षा में "व्यक्ति को बाँध सकते हैं उसकी कल्पना और विचारों को नहीं" विषय पर वाद-विवाद किया। मुझे यह अनुभव बहुत रोचक और शिक्षाप्रद लगा। समूह में मिलकर तर्क तैयार करना और सामने वाले समूह के तर्कों का उत्तर देना चुनौतीपूर्ण था। इस वाद-विवाद से मुझे पता चला कि स्वतंत्र विचार और कल्पना कितनी महत्वपूर्ण होती है और

उनके बिना प्रगति संभव नहीं। साथ ही यह भी समझ में आया कि विचारों को सही दिशा में मार्गदर्शन देना भी आवश्यक है। वाद-विवाद के दौरान मैंने आत्मविश्वास बढ़ाया और अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सीखा। अंत में, मुझे यह अनुभव बहुत आनंददायक और ज्ञानवर्धक लगा।

देखना – सुनना – समझना....

(क) "धूम गगन में मँडराता है।"

सुगंध का अनुभव सूँघकर किया जाता है। धुएँ को देखा जा सकता है। वायु का अनुभव स्पर्श द्वारा किया जा सकता है और अनुभवों को बोलकर भी कहा या बताया जा सकता है जैसे कि कोई कमेंट्री कर रहा हो।

जो व्यक्ति देख पाने में सक्षम नहीं है, आप उन्हें निम्नलिखित स्थितियों का अनुभव कैसे करवा सकते हैं-

- वर्षा की बूँदों का
- धुएँ के उड़ने का
- खेल के रोमांच का

उत्तर:

- वर्षा की बूँदों का – स्पर्श से
- धुएँ के उड़ने का – बोलकर
- खेल के रोमांच का – बोलकर

(ख) मूक अभिनय द्वारा कविता का भाव

'विद्यार्थियों के बराबर-बराबर की संख्या में दो दल (टीम) बनाइए। दलों के नाम रखें- कल्पना और आकांक्षा। 'कल्पना' दल से एक प्रतिभागी आगे आए और मूक अभिनय (हाव-भाव या संकेत) के माध्यम से इस कविता की किसी भी पंक्ति का भाव प्रस्तुत करें। 'आकांक्षा' दल के प्रतिभागियों को पहचानकर बताना होगा कि अभिनय में किस पंक्ति की बात की जा रही है।

पहचानने की समय सीमा भी निर्धारित की जाए। निर्धारित समय सीमा पर सही उत्तर बताने वाले दल को अंक भी दिए जा सकते हैं। इस तरह से खेल को आगे बढ़ाया जाए।

उत्तर:

विद्यार्थी स्वयं करें।

आपदा प्रबंधन

अग्नि सदा धरती पर जलती / धूम गगन में मँडराता है!"

आग, बाढ़, भूकंप जैसी आपदाएँ अचानक आ जाती हैं। सही जानकारी से आपदाओं की स्थिति में बचाव संभव हो जाता है।

(क) कक्षा में अपने शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए कि क्या-क्या करेंगे यदि-

- कहीं अचानक आग लग जाए
- आपके क्षेत्र में बाढ़ आ जाए
- भूकंप आ जाए

उत्तर:

- कहीं अचानक आग लग जाए
    1. घबराएँ नहीं, शांत रहकर, समझदारी से काम लें।
    2. लोगों को ज़ोर-ज़ोर से आवाज लगाकर स्थिति से अवगत कराएँ।
    3. आग वाले स्थान से तुरंत बाहर निकलें व अन्य को भी निकालें।
    4. लिफ्ट के स्थान पर सीढ़ियों का प्रयोग करें।
    5. बुजुर्गों व बच्चों को बाहर निकालने का प्रयास करें।
    6. मुँह पर गीला कपड़ा रखे जिससे धुएँ से बचाव हो सके।
    7. आग बुझाने की कोशिश करें।
    8. तुरंत फायरब्रिगेड को 112 नंबर पर कॉल करें।
- आपके क्षेत्र में बाढ़ आ जाए
    1. परिवार और पड़ोसियों को हिम्मत बँधाएँगे।
    2. घर के जरूरी सामानों को एकत्रित कर सुरक्षित करेंगे।
    3. बच्चों व बुजुर्गों को सबसे पहले सुरक्षित करेंगे।
    4. जरूरी – दस्तावेज, पैसे, दवाइयाँ, मोबाइल, सूखा खाने का सामान, टार्च, इत्यादि एक बैग में सँभाल लेंगे।
    5. बिजली, गैस की मुख्य सप्लाई बंद कर देंगे।
    6. घर की छत पर चले जाएँगे।
    7. आपातकालीन नम्बर पर तुरंत कॉल करके सहायता माँगेंगे।
- भूकंप आ जाए
    1. जल्दी से भागेंगे नहीं
    2. किसी मजबूत मेज या पलंग के नीचे छिप जाएँगे।
    3. किसी मजबूत चीज़ को पकड़ लेंगे।
    4. यदि संभव हो तो इमारत से बाहर निकलकर खाली स्थान पर आ जाएँगे।
    5. पंखे, काँच, अलमारी से दूर रहेंगे।
    6. दीवार के कोने में चले जाएँगे।
    7. किसी बैग, तकिए इत्यादि से सिर को ढक लेंगे।
    8. बिजली के खंबे से दूर रहेंगे।
    9. यदि गाड़ी में होंगे तो उसे साइड पर रोक देंगे।

(ख) "मैं आपदा के समय क्या करूँगा या करूँगी?"–एक सूची या चित्र आधारित योजना बनाइए।

उत्तर:

आपदा के समय मैं निम्नलिखित काम करूँगा-

1. शांति और धैर्य बनाएँ रखूँगा।
2. घबराऊँगा नहीं।

3. सहायता के लिए दूसरों को आवाज़ दूँगा।
4. आपदा निवारण संस्था में फोन करूँगा।
5. जरूरी सामान एकत्रित कर लूँगा – जैसे- दस्तावेज, रुपए, मोबाइल, टॉर्च, पॉवर ब्रेक इत्यादि।
6. सुरक्षित बाहर आने का स्वयं प्रयास करूँगा।
7. घर के बच्चों और बुजुर्गों को पहले सुरक्षित करूँगा।

शिल्प

"स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प
भूमि को सिखलायेगा!"

हमारे देश में हजारों वर्षों से अनगिनत शिल्प प्रचलित हैं। उनमें से कुछ के बारे में आप पहले से जानते होंगे। इनके बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

(क) अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए शिल्प-कार्यों को उनके सही अर्थों या व्याख्या से मिलाइए-

शिल्प-कार्य	अर्थ या व्याख्या
1. काष्ठ शिल्प	1. काँच से झूमर, सजावटी वस्तुएँ और रंगीन खिड़कियाँ आदि बनाना
2. मृत्तिका शिल्प	2. कपड़ों पर कढ़ाई, बुनाई, छपाई, बंधेज आदि सजावटी कार्य
3. धातु शिल्प	3. कागज से खिलौने, सजावट, लिफाफे और पेपर मेशी बनाना
4. काँच शिल्प	4. लकड़ी से वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ आदि बनाना
5. वस्त्र शिल्प	5. मिट्टी से बर्तन, दीये, मूर्तियाँ और सजावटी चीजें बनाना
6. कागज शिल्प	6. ताँबा, पीतल, लोहे जैसी धातुओं से दीपक, मूर्तियाँ, थालियाँ आदि बनाना
7. पत्थर शिल्प	7. पारंपरिक चित्रकलाओं, जैसे मधुबनी, गोंड, वरली आदि से कलाकृतियाँ बनाना
8. चमड़ा शिल्प	8. कपड़ों या सजावट की वस्तुओं में शीशे जोड़ना या जड़ाई करना
9. बाँस और बेंत शिल्प	9. लाख से चूड़ियाँ, खिलौने, डिब्बे और अन्य सजावटी वस्तुएँ बनाना
10. मोती एवं आभूषण शिल्प	10. लकड़ी, पत्थर या धातु पर बारीक खुदाई द्वारा डिजाइन बनाना
11. लाख शिल्प	11. बाँस और बेंत से टोकरियाँ, कुर्सियाँ, चटाई, पंखे आदि बनाना
12. शीशा शिल्प	12. चमड़े से जूते, बेल्ट, बैग और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाना
13. चित्रकला शिल्प	13. संगमरमर या अन्य पत्थरों से मूर्तियाँ बनाना, मंदिरों की सजावट करना आदि
14. नक्काशी शिल्प	14. रंग-बिरंगे मोतियों से हार, कंगन, झुमके आदि गहने बनाना

उत्तर:

1. – 4
2. – 5
3. – 6
4. – 1
5. – 2
6. – 3
7. – 13
8. – 12
9. – 11
10. – 14
11. – 9
12. – 8
13. – 7
14. – 10

(ख) अपने विद्यालय या परिवार के साथ हस्तशिल्प से जुड़े किसी स्थान या कार्यशाला का भ्रमण कीजिए और उस हस्तशिल्प के बारे में एक रिपोर्ट बनाइए।

अथवा

राष्ट्रीय हस्तशिल्प संग्रहालय की नीचे दी गई वेबसाइट में आपको कौन-सा हस्तशिल्प या कलाकृति सबसे अच्छी लगी और क्यों, उसके विषय में लिखिए।

https://nationalcraftsmuseum.nic.in/

उत्तर:

हस्तकला केंद्र पर रिपोर्ट

पिछले सोमवार मैं अपने माता-पिता के साथ हस्तशिल्प कला केंद्र गया। जब मैं वहाँ गया तो मैंने देखा कि वहाँ का वातावरण बहुत शांत था क्योंकि वहाँ शोर मचाने की इज़ाजत नहीं थी। हमने वहाँ इतनी सुंदर मूर्तियाँ देखीं कि एक बार तो लगा जैसे वो जीवित हों। वहाँ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कुछ लोग खड़े थे, जो सबको उन मूर्तियों के बारे में जानकारी दे रहे थे।

उन मूर्तियों के नीचे बनाने वाले का नाम और बनने का वर्ष खुदा हुआ था। मैं देखकर आश्चर्यचकित था कि इतने वर्ष पुरानी होकर भी वो नई जैसी सुंदर और आकर्षक थीं। हमने देवी-देवताओं व पशु-पक्षियों की सुंदर मूर्तियाँ देखी। फिर हमने कला केंद्र से बाहर आकर खाना खाया। वहाँ का वातावरण बहुत ही स्वच्छ था। हम शाम तक घूमकर घर आ गए। मुझे यह भ्रमण याद रहेगा।

अथवा

छात्र स्वयं करें।

साझी समझ

(क) 'गिल्लू' कहानी को पुस्तकालय से ढूँढ़कर पूरी पढ़िए और अपने साथियों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए।

उत्तर:

महादेवी वर्मा को एक बार अपने घर के आँगन में सोनजुही की जड़ और दीवार की संधि में एक गिलहरी का बच्चा घायल अवस्था में मिला जिसे कौओं ने अपना सुलभ आहार समझकर अधमरा कर दिया था। महादेवी वर्मा उसे उठाकर अपने घर के अंदर ले आईं और पानी से उसका रक्त पोंछकर उस पर पेंसलिन का मरहम लगाया, रूई को दूध और पानी में भिगोकर बूँद-बूँद उसके मुँह में डालने का प्रयत्न किया। कुछ घंटों के उपचार के बाद वह बच्चा स्वस्थ हो गया। महादेवी ने उसका नाम गिल्लू रखा।

गिल्लू पूरे घर में घूमता-खेलता रहता था। वह महादेवी वर्मा को अपनी माँ मानता था। वह कभी उनके पैर से सिर तक दौड़ लगाता, कभी पर्दे पर चढ़ता, कभी उनकी थाली में खाता, कभी फूलदान के पीछे छिपकर उन्हें चौंकाता। सारा दिन घर में दौड़ लगाता। जब वह थोड़ा बड़ा हुआ और उसके जीवन का पहला वसंत आया तो महादेवी ने खिड़की जाली का एक हिस्सा खोल दिया, जिससे बाहर निकलकर उसने चमेली के पेड़ पर दौड़ लगा दी। वह सारे दिन अन्य गिलहरियों का नेता बनकर दिन-भर पेड़ पर घूमता और शाम होते ही अपने झूले में आ जाता।

जब महादेवी वर्मा एक बार दुर्घटना ग्रस्त हो गईं और उन्हें तीन दिन तक अस्पताल में रहना पड़ा तो गिल्लू ने उन तीन दिन तक भोजन नहीं किया। जब महादेवी वर्मा घर वापस आ गईं तो वह उनके सिरहाने बैठकर उनके बालों को धीरे-धीरे सहलाता रहा। गिल्लू का जब अंतिम समय आया तो वह महादेवी के बिस्तर पर आ गया और अपने ठंडे पंजों से उनकी ऊँगली को पकड़कर अंतिम साँस ली। महादेवी जी ने उसे उसी सोनजुही की जड़ में समाधि दे दी जहाँ उन्हें वह मरणासन्न स्थिति में मिला था।

खोजबीन के लिए नीचे दी गई इंटरनेट कड़ियों के माध्यम से आप महादेवी वर्मा और उनकी रचनाओं के विषय में जान, समझ सकते हैं-

- **महादेवी वर्मा | कवयित्री | जीवन और लेखन | हिंदी | भाग-1**
  https://www.youtube.com/watch?v=stQL9KgVZHg
- **महादेवी वर्मा | कवयित्री | जीवन और लेखन | हिंदी | भाग-2**
  https://www.youtube.com/watch?v=_uqB5M9ZX60
- **कविता मंजरी, बारहमासा**
  https://www.youtube.com/watch?v=bjgVp0W-Muw
- **गिल्लू–महादेवी वर्मा**
  https://www.youtube.com/watch?v=uxpOlfd05K8
- **महादेवी वर्मा, भारतीय कवयित्री**
  https://www.youtube.com/watch?v=mWwpjf5YNT4